मई माह के कृषि कार्य

किसान बहिनों एवं भाईयों, नमस्कार ! मई माह जिसे आप वैशाख-ज्येष्ठ भी कहते है ग्रीष्म ऋतु का आगमन है तथा जाडों से ठिठुरी हुई धरती, मानव , पशु-पक्षियों में नई जान डालने वाले इस माह में खरीफ़ की फसलें बोने का उचित समय होता है । इस लेख में हम आपके प्रश्नों पर आधारित मई में होने वाले कृषि कार्य बतायेगें । सभी नाप-तोल प्रति एकड हिसाब में है । खाद उपयोग मिट्टी जांच के हिसाब से करें ।

तीन जरूरी बातें -

- **बीजोपचार** - सर्वोत्तम फसल सुरक्षा - हर रोज अखवार, रेडियों व दूरदर्शन में आपको खडी फसलों में विशेषकर सब्जियों, फलों व चारे पर छिडकी दवाईयों का मानव व पशुओं पर पडे बुरे प्रभाव की खबरें मिलती रहती है इन दवाईयों के बुरे प्रभाव को हम बीजोपचार से उसी तरह समाप्त कर सकते है जैसेकि बच्चों के पैदा होते ही बीमारी-रोधक टीके लगाकर उन्हें सारी ऊमर के लिए सुरक्षित कर लेते हैं । बीजापचार में 1 कि.ग्रा. बीज के लिए २-३ ग्राम दवाई लगती है तथा 1 एकड में सिर्फ १०-१५ रूपये तक का खर्चा है । सही दवाई व ढग़ से से किया गया बीजोपचार से फसल पर बीमारी नहीं लगेगी तथा दवाईयां छिडकने पर खर्चा नहीं करना पडेगा । यदि २-३ दवाईयों से एक साथ बीजोपचार करना हो तो बीज पर सबसे पहले कीटनाशक, फिर बीमारी नाशक तथा सबसे बाद जैव-खाद का उपचार करें । इससे स्वस्थ्य व पौष्टिक फसल के साथ्-साथ पैसे की बहुत बचत होती है । यह फसल सुरक्षा का बहुत ही सुरक्षित व कामयाब तरीका है, इसे जरूर अपनाएं ।
- **प्रमाणित कृषि आदान** (प्रगतिशील खेती का आधार) - उच्च श्रेणी के कृषि आदन जैसे रोगरोधक बीज, शुद्ध खाद व दवाईयां, कृषि यंत्र, जैव-खाद, सिंचाई जल, ऋण तथा कृषि ज्ञान सिर्फ प्रमाणित स्त्रोतों से लेने से ही आपको बिना कोई परेशानी भरपूर व लाभदायक पैदावार मिल सकती है । किसी घटिया स्त्रोत से ये आठों कृषि आदान सस्ते व आसानी से तो मिल सकते है परन्तु उसमें मिलावट व धोखा हो सकते है जिससे फसल में भारी नुकसान उठाना पड सकता है । कृपया सावधान रहें व लालच में न आयें ।
- **जैव-खाद अपनाएं** (फसल लागत में कमी पायें) - दालों, मूंगफली, सोयाबीन, बरसीम जैसी फसलों में खेती में लागत कम करने के लिए उर्वरकों के साथ्-साथ जैव-खादें भी जरूर प्रयोग करें । राइजोवियम जैव-खाद जोकि हर फसल के लिए अलग होती है । १०-२० रूपये का खर्च करने से प्रति एकड एक बोरा यूरिया की बचत होती है । अन्य फसलें जैकेकि मक्का, कपास, सब्जियां, चारा में एजोटोवैक्टर, गन्ने में एसीटोवैक्टर तथा धान में एजास्पीरीलियम का प्रयोग करें ।ये जैव खाद हवा से नत्रजन खींचकर मुफ्त में फसल की जरूरत पूरी करते हैं । उच्च या मध्यम फासफारस वाली मिट्टी में, जिसका हम मिट्टी परीक्षण से पता लगाते, में पी,एस,एम. जैव खाद जरूर लगाये, ये मिट्टी में पडे फासफोरस या डाली फासफोरस खाद को घुलनशील करके शीघ्र फसल को देता है तथा पैदावार काफी हद तक बढ़ाता है ।

धान - नर्सरी का उचित समय १०-३० मई है । उन्नत किस्मों में पंजाब के लिए पी आर ११६, ११४, १११, १०८, ११५ व ११३ है । सी आर-११३ किस्म १२५ दन में पक जाती है बाकी किस्में १४०-१४५ दिन लेती है । हरियाणा के लिए जया, पी आर-१०६, एच आर १२० व १२६ किस्में १४०-१४५ दिन ; आई आर ६४ व एच के आर ४६ किस्में १३५ दिन तथा पूसा ३३ व गोविदं किस्में ११५-१२० दिन बीज से बीज तक लेती है । हिमाचल में उन्नत किस्में पालम धान ९५७, हिमालय २२१६, पी आर २४२१, वी एल धान २२१, कस्तूरी, हसन सराय, हिमालय ७४१, चायना ९८८, आई आर ५७९, आर ५७५, हिमालय ७९९, भृगुधान, चिंग शी १५,पी आर १०८ व १०९, जया तथा एच के आर १२६ है । नसरी बीजाई के लिए अपने जिले की सबसे बढिया किस्म चुनें । इसके १०-१२ कि.ग्रा. बीज प्रति एकड को १० लीटर पानी जिसमें 1 कि.ग्रा. नमक घुला हो डालकर, ऊपर तैरते वाले बीजों को फैक दें तथा नीचे बैठे बीजों को साफ पानी में अच्छी तरह से धो लें । फिर १० लीटर पानी में ५ ग्राम एमिसान या १० ग्राम सेरासन तथा 1 ग्राम स्ट्रैप्टो साईकिलन या २.५ ग्राम पैसामाईसिन घोलकर सारे बीज को २४-३६ घंटे तक भिगायें ताकि यह अंकुरित भी हो जाये । नर्सरी बीजने से पहले खेत में १२-१५ टन कम्पोस्ट डालकर २-३ बार जुताई करके मिट्टी में मिला दें फिर पानी डालकर पडलर से गारा बना लें । खेत में आधा बोरा यूरिया, एक बोरा सिंगल सुपरफासफेट व १० कि.ग्रा. जिंक सल्फेट डालकर सुहागा लगा दें । इससे खरपतवार भी नष्ट हो जाते हैं तथा पानी की रिसाव भी बहुत कम हो जाता है । खेत में आधा बोरा यूरिया, एक बोरा सिंगल सुपरफासफेट व १० कि.गग्रा. जिंक सल्फेट डालकर सुहागा लगा दें । इसके ४-५ घंटे बाद १० न् १० फुट आकार की खेत में ४०० क्यारियां बनाकर 1 कि.ग्रा. अंकुरित बीज प्रति क्यारी लगा दें तथा कम्पोस्ट छिडक कर बीज के ऊपर पतली तह बना दें ताकि पक्षी बीज न चुग जायें । खेत को हल्की-हल्की सिंचाई करके नम रखें तथा दो हप्ते बाद आधा बोरा यूरिया पूरे खेत में छिडकें । बीजाई के 1 हप्ते पहले या बाद १.२ लीटर ब्यूटाक्लोर ५० ईसी को ६० कि.ग्रा रेत में मिलाकर छिडकें इससे नर्सरी में खरपतवार नष्ट हो जायेगें । यदि सुत्रकृमि की समस्या है तो ३-४ ग्राम कार्बोपयूरान (पयूराडान ३-जी) नर्सरी तैयार करते समय प्रति क्यारी (१०० वर्ग फुट) डालें । यदि नर्सरी में पत्तों के ऊपरी हिस्से पीले पड जाये तो ०.५ प्रतिशत फेरस सल्फेट (५०० ग्राम हरा थोथा १०० लीटर पानी मे) की २-३ स्प्रे हपते के अन्तर पर करें । यदि पते पीले होकर कथे-रंग जैसे हो जाये तो ०.५ प्रतिशत जिंक सल्फेट (५०० ग्राम जिंक सल्फेट १०० लीटर पानी में)की 1 स्प्रे करें । मई में धूप बहुत तेज होती है तथा हल्की-हल्की सिंचाईयों से मिट्टी नम

रखें । पानी खडा नहीं रहना चाहिए बरना पौध नष्ट हो सकती है । जून में २५-३० दिन तथा जुलाई में ६० दिन तक की पोध रोपी जा सकती हैं ।

<u>मक्की</u> - हिमाचल, उत्तरांचल व जम्मू-काश्मीर में मक्का मई के दूसरे सप्ताह में तथा पंजाब में मई के आखिरी सप्ताह में लगा सकते है । उन्नत किस्मों में जे एच ३४५९, प्रकाश, केसरी, पारस, सरताज, प्रभात, बायो-९६३७ व पर्ल पोपकार्न पंजाब के लिए तथा गिरिजा कम्पोजिट, सरताज, अर्ली कम्पोजिट, पार्वती, नवीन कम्पोजिट, हिम-१२३, संकर किस्में कंचन ५१७ एवं १०१ अन्य राज्यों में लगाई जा सकती है । मई मे बोई मक्की अगस्त में पक जाती है । मक्की के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी चाहिए । बीजाई के समय १० टन कम्पोस्ट, आधा बारो यूरिया, ३ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट, आधा बोरा म्यूरेट आफ पोटाश व १० कि.ग्रा जिंक सल्फेट अन्य फसलों की तरह बीज के नीचे साइड में लाइनों में डालें । उन्नत किस्मों के ८ कि.ग्रा. बीज को २४ ग्राम बाविस्टीन से उपचारित करके प्लांटर की सहायता से २ फुट दूर लाइनों में तथा ९ इंच पौधों में दूरी पर २ इंच गहरा लगाएं । खरपतवार नियंत्रण के लिए २ दिन के अन्दर ५०० से ८०० ग्राम एट्राजीन ५० डब्ल्यु.पी. २०० लीटर पानी में छिडकें । मक्का के दो लाईनों के बीच सोयाबीन, मूंग या उडद की एक लाईन भी लगा सकते है जिसके लिए कोई विशेष क्रिया नहीं करनी पडती है इससे खरपतवार नियंत्रण वढिय़ा हो जाता है तथा मुख्य फसल के साथ-साथ दाल की फसल प्राप्त करें आय में बृद्धि होती है ।

<u>कपास</u> - मई कपास बीजने के लिए सवोत्तम माह है वशर्ते सिंचाई की व्यवस्था हो । उन्नत किस्में एच ७७७ (देशी) एच एस ४५, एच एस ६, धनलक्ष्मी (संकर), एच डी १०७ (देशी), अगेती तथा एच ९७४ व एच डी १२३ (देशी), डी एस ५ (देशी), पछेती बीजाई के लिए हरियाणा में सिफारिश की गई है । पंजाब में अमेरिकन किस्मों में हाइब्रिड एल एच एच १४४, एफ १८६१, एफ १३७८, एफ ८४६, एच एल १५५६ तथा देशी किस्मों में एल डी ६९४ व ३२७ अच्छी हैं । कपास के लिए रेतीली लवणीय तथा सेम वाली भूमि को छोडकर सभी प्रकार की भूमियों में बीजाई की जा सकती है । खेत में १०-१५ टन कम्पोस्ट खाद डालें व ३-४ गहरी जुताई करें तथा सुहागा लगाएं जिससे कीडों के अंडे व खरपतवार नष्ट हो जाएगें । बीजोपचार के लिए दो घंटे तक १० लीटर पानी में एमीसान (५ ग्राम), स्ट्रप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम, सक्सीनिक एसिड 1 ग्राम के धोल में भिगोये फिर १० मि.ली. क्लोरपाइरिफास १० लीटर पानी में मिलाकर बीज पर छिडके व छाया में ३०-४० मिनट तक सुखा लें इससे दीमक से बचाव हो जाता है । जडगलन की समस्या वाले क्षेत्रों में बीज को २ ग्राम वाविस्टिन प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित कर लें । संकर किस्मों में रोएं उतरे बीज की १.५ कि.ग्रा. तथा देशी कपास में ६ से ८ कि.ग्रा. मात्रा को लाइनों में २ फुट तथा पौधों में 1 फुट दूरी पर २ इंच गहरा बोये । संकर कपास में 1 बोरा यूरिया , 1 बोरा डी ए पी, 1 बोरा म्यूरेट आफ पोटाश व १० कि.ग्रा. जिंक सल्फेट बीजाई पर दें । अमेरिकन कपास में खाद की मात्रा आधी कर दें । सिर्फ देशी कपास में १/४ बोरा यूरिया पोधें बिरला करने पर तथा १/४ बोरा यूरिया बोकी आने पर दें तथा आधा बोरा जिंक सल्फेट बीजाई पर दें । साधारण निराई-गुडाई से खरपतवार नियंत्रण अच्छा होता है । यदि मजदूरों की कमी हो तो २ कि.ग्रा. स्टांप - ३० को २०० लीटर पानी में घोलकर फसल उगने से पहले छिडके । बीमार पौधों को खेत से लगातार निकाल कर नष्ट करते रहें । सिंचाई के लिए डोलिया बनाएं जिससे २५-३० प्रतिशत सिंचाई जल की बचत होती है तथा पोषक तत्वों का बढिय़ा प्रयोग होता है ।

<u>गन्ना</u> - की सी ओ एच ३५ किस्म मई के पहले सप्ताह तक लगा सकते है । यह किस्म तेजी से बढ़ने वाली है । जिसका गन्ना मोटा, नरम व रसीला होता है । यह कमजोर मिट्टी पर तथा सिफारिश की गई नत्रजन की आधी मात्रा से ३२० क्विंटल पैदावार तथा १८-२० प्रतिशत खांड देता है । अधिक बढ़ने पर गिर जाता है इसलिए इसे द्वि-पंक्ति विधि से बोना, मिट्टी चढ़ाना व बाधना बहुत जरूरी है । बीजाई के ६ सप्ताह बाद पहली सिंचाई दें तथा अप्रैल माह में बताई गई बीजाई व अन्य क्रियायें करें । शदरकालीन, बसंतकालीन व मोढ़ी फसल को मई में १० दिन के अन्तर पर सिंचाई करें । सी ओ जे ६४ को अधिक सिंचाई की जरूरत होती है । सी ओ ११४८ व सी ओ एस ७६७ किस्में सूखे को काफी सहन कर लेती है । मई में गन्ने पर हल्की मिट्टी चढ़ा दें इससे खरपतवार नियंत्रण तो होता ही है, फसल भी गिरने से बच जाती है । हानिकारक कीडों का पिछले माह में बताई गई विधि से नियंत्रण करें । रत्ता रोग, सीका रोग व कंडुआ बीमारियों से बचने के लिए रोगरहित बीज लें तथा बीजोपचार जरूर करें । अगोलावेधक की रोकथाम के लिए इसके अंडे तथा ग्रस्त पोधों को इकठ्ठा करके नष्ट कर दें । यदि ५ प्रतिशत से अधिक पौधों पर कीडे लगे हों तो १० कि.ग्रा. फोरेट-१० जी खाद के साथ देकर सिंचाई करें ।

<u>ग्रीष्मकालीन मूंगफली</u> - सिंचित क्षेत्रों में मई के पहले सप्ताह तक बीज सकते है इसके लिए मूंगफली-गेहूं फसल चक्र अपनाया जा सकता है परंतु एक ही जमीन पर हर वर्ष मूंगफली न उगाएं इससे मिट्टी से कई बीमारियां पैदा हो जाती हैं। उन्नत किस्में एम ५२२, एम ३३५, एच बी ८४ सिंचित क्षेत्रों में तथा एम ३७ बारानी क्षेत्रों में जहां वर्षा अच्छी होती है लगाई जा सकती है । बाकी क्रियाएं अप्रैल माह में बता चुके हैं । खरपतवार निकालने के लिए ३ सप्ताह बाद निराई-गुडाई करें तथा साथ में सिचाई के लिए नालियां भी बना लें । यदि चेपा जोकि पौधों से रस चूसते हैं हमला करें तो २०० मि.ली. मैलाथियान ५० इसी को २०० लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिडके । बीमारियों से रोकथाम के लिए बीजोपचार ही सबसे सर्वोत्तम तरीका है ।

चारा - मई माह में सिंचित हालत में चारे के लिए मक्की (किस्में जे १००६, प्रभात, प्रताप, केसरी व मेघा) ज्वार (किस्में जे एम २०, एच सी १३६, १७१, २६०, ३०८, एस एल ४४ व पंजाब सूडेक्स चरी-१) बजरा (पी सी बी १४१) मकचरी (टी एल १), नेपियर-बाजना हाइब्रीड (पी वी एन-२३३ व ८३, संकर -२१), गिन्नी घास (पी.जी.जी.५१८ व १०१)ए ग्वारा (एफ.एस.२७७ व ग्वारा-८०), लोबिया (लोबिया -८८ व १०) यह सिफारिश की जाती है कि चारे की फसलें मिलाकर बोने में चारा पौष्टिक बनता है तथा पैदावार भी अधिक तथा ज्यादा कटाइयां मिलती हैं । मिश्रित चारे में सही मात्रा में बीज लेकर बीमारियों के लिए उपचारित कर लें फिर खेत में २-३ बार जुताई करके १० टन देशी खाद तथा 1 बोरा यूरिया डालकर बीज छिडकर बो दें । काफी बढ़वार होने पर जरूरत के अनुसार चारे की कटाइंया लेते रहें तथा कटाई के बाद आधा बोरा यूरिया छिडक दें ।

मूंग व उडद - अप्रैल में बोई फसलों से 1 माह बाद खरपतवार निकाल दें तथा १५ दिन के अन्तर पर सिंचाई करें ताकि फूल तथा फलियां लगने पर पानी की कमी ना हो व दाना मोटा पडे । मूंग व उडद में सिाप कीडे के हमले में फूल गिर जाते है तथा फसल की गुणवत्ता व पैदावार कम हो जाती है । नियंत्रण के लिए फूल पडते ही १०० मि.ली. मैलाथियान ५० ई सी १०० लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें । यदि फलीछेदक का हमला हो तो 1 लीटर एण्डोसल्फान ३५ ई सी को १०० लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें जब दो तिहाई फलियां बन जायं तो सिंचाई बंद कर दें । जब पत्ते गिरने लगें और ८० प्रतिशत फलियां पीली पड जाय तो फसल काट कर एक स्थान पर इकठ्ठा करके ४-५ दिन बाद गहाई करें । दाने निकालने के बाद पौधों से कम्पोस्ट खाद बना सकते हैं । बिमारियों से बचाव के लिए रोगरोधक किस्में लगाएं तथा बीजोपचार जरूर करें । बीमार पौधों को खेत से निकाल कर जला दें ।

अरहर - फसल बहुत कम लागत में उगाई जा सकती है तथा ३ क्विंटल से ज्यादा पैदावार देती है । सिंचित अवस्था में अरहर को हरियाणा व हिमाचल में मई माह में लगा सकते है । उन्नत किस्में टी २१, यू.पी. ए. एस १२० हरियाणा में तथा सरिता किस्म हिमाचल में लगाई जा सकती है । बीज को राइजोवियम जैव खाद से जरूर उपचारित करें इससे पैदावार में बहुत बढ़ोतरी होती है । बीजाई संबंधी बाकी क्रियायें अप्रैल माह में बताई जा चुकी है । अप्रैल में बोई फसल में २५ दिन बाद निराई-गुडाई कर दें तथा एक हल्की सी सिचाई भी दे दें ।

सब्जियां - मिर्च - मई माह के दूसरे पखवाडे में मिर्च की नर्सरी लगा सकते हैं । ४०० ग्राम बीज 1 एकड खेत में पौध रोपण को लिए काफी होता है । उन्नत किस्मों में पूसा ज्वाला व पूसा सदावहार ८०-१०० क्विंटल हरी मिर्च देती है । बीमारियों की रोकथाम के लिए ४०० ग्राम बीज को 1 ग्राम थिरम या केप्टान से उपचारित करें । मूली - की पूसा चेतकी किस्में मई में बोई जा सकती है तथा ४० से ४५ दिन में तैयार हो जाती है । टमाटर व बैंगन - खडी फसल में सप्ताह में एक हल्की सिंचाई दें तथा 1 बोरा यूरिया डालें । प्याज - गर्मियों में ऊचे पहाडी क्षेत्रों में प्याज एक महत्वपूर्ण फसल बन गई है । इसके लिए अग्रीफाउंड डार्क रेड व एन ५३ किस्में उपयुक्त हैं । इसकी नर्सरी की रोपाई मई माह में ८ x ४ इंच दूरी पर की जाती है । फसल अक्टूबर में तैयार होकर २००-२५० क्विंटल पैदावार देती है । बंदगोभी, फूलगोभी, गांठगोभी, मटर व फ्रांसबीन - ऊचें पहाडी क्षेत्रों में ये फसलें मई में रोपी जाती है तथा अगस्त में तैयार होकर बहुत फायदा देती है ।

बागवानी - बचे हुए में खाद मई में दे सकते है । नया बाग लगाने के लिए गढ्ढे अभी खोद दें ताकिं धूप से कीडो तथा बीमारियों को नियंत्रण हो सके । माह के अन्त में इन गढ्ढों में आधा उपर वाली मिट्टी तथा आधी कम्पोस्ट में क्लोरपाइरीफास दवाई मिलाकर पूरी तरह से उपर तक भर दें । आम - मई माह में फूलों की जगह पत्तों के गुच्छे बन जाते हैं इन्हें तोड दें तथा ०.१ प्रतिशत मैलाथियान स्प्रे करें । इनके बाद एन पी ए का ३०० पी पी एम घोल छिडकें । नीबू - जाति के पोधों में फल गिरने की शिकायत मिलती है, इसे २,४ डी (१० पी पी एम)+ ०.५ प्रतिशत जिंक सल्फेट + आरोफुगिन (२० पी पी एम) के घोल से स्प्रे करने पर रोका जा सकता है ।

फूल - ग्रीष्म ऋतु वाले फूलों को नियमित पानी देते रहें तथा गमलों में लगाएं हुए हो तो तेज धूप से बचाएं । घास के नऐ लौन लगाने के लिए मई उपयुक्त माह है । लौन को समतल करके दूब धास विखेर दें तथा हल्की मिट्टी से दबाकर हल्की-हल्की सिंचाई करते रहें ।

किसान भाई मई माह की बाकी कृषि कार्यो के बारे में जानकारी सीधा फोन (९५१२०-२५३५६२८) से भी ५-६ बजे सोमवार से शुक्रवार प्राप्त कर सकते हैं अथवा ई मेल wsguleria@kribhco.net से भी संपर्क कर सकते हैं । अगले माह फिर मिलेंगे , जयहिंद !